Artistic Narration, Vol. VIII, 2017, No. 2: ISSN (P) : 0976-7444 (e) : 2395-7247Impact Factor 3.9651 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43285

गाँधी जी के विचारों से प्रभावित कलाकार

नीतू
अंशकालिक प्रवक्ता, आई.एन.पी.जी. कॉलिज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

नीतू,
गाँधी जी के विचारों से प्रभावित कलाकार,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp.69- 77
http://anubooks.com/
?page_id=485

सारांश

महात्मा गाँधी, एक ऐसा नाम है जिसे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में किसी परिचय की जरूरत नहीं। गाँधी जी के सम्पूर्ण जीवन का आधार 'सत्य' पर आधारित था। गांधीवाद के बुनियादी तत्वों में से सत्य (जिसका अर्थ सच्चाई है) सर्वोपरि है और सत्य ही किसी भी राजनैतिक संस्था, सामाजिक संस्थान इत्यादि की धुरी होनी चाहिए। गाँधी का विश्वास था 'मानवता' का जन्म 'अहिंसा' से ही हुआ है। गाँधी जी ने कहा था कि जहाँ अहिंसा है वहाँ सत्य है और जहाँ सत्य है, वहाँ ईश्वर है, कला को मानवीय सत्य की रक्षा का ध्येय लेकर चलने का समय आ गया है और यह सत्य बिना हिंसा को निर्मूल किये नहीं पाया जा सकता। आज के परिवेश में गाँधी जी से जुड़ा प्रत्येक विचार किसी न किसी रूप में हमारे चारों ओर परिलक्षित होता है। उनसे जुड़ा प्रत्येक विचार आज के वर्तमान समय में बहुत महत्वपूर्ण है। कला भी एक ऐसा विषय है जिसमें कलाकार गाँधी जी के विचारों से कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में प्रभावित होते हैं। कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से सारे देश में स्वच्छता का संदेश दिया। गाँधीवादी विचारधारा का एक अन्य उदाहरण जो कि स्वच्छता से भी प्रेरित है वो है सुप्रसिद्ध गोवा का, जहाँ सैलानियों का उमड़ा सैलाब किसी भी महीने में देखने को मिल सकता है। गाँधी जी के विचारों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सभी कलाकारों पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक कलाकार की कलाकृति कहीं न कहीं, गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होती है। इस कड़ी में एक अन्य उदाहरण 'सुदर्शन पटनायक' का दिया जा सकता है। गाँधी जी के समकालीन कलाकार रामकिंकर बैज का गाँधी जी के सत्याग्रह में बहुत योगदान रहा उन्होंने इस दौरान बहुत से पोस्टर व बैनर तैयार किये।

नीतू

आप मुझे जंजीरो में जकड़ सकते हैं,
यातना दे सकते हैं, यहाँ तक की आप
इस शरीर को नष्ट कर सकते हैं,
लेकिन आप कभी मेरे विचारों को कैद
नहीं कर सकते.....

महात्मा गाँधी, एक ऐसा नाम है जिसे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में किसी परिचय की जरूरत नहीं। भारत ही नहीं वरन् पूरे विश्व पटल पर महात्मा गाँधी सिर्फ एक नाम ही नहीं अपितु शांति और अहिंसा का प्रतीक है। महात्मा गाँधी के पूर्व भी शान्ति और अहिंसा की अवधारणा फलित थी, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार सत्याग्रह, शान्ति व अहिंसा के रास्तों पर चलते हुए अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर किया। उसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता तभी तो प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि –

"हजार साल बाद आने वाली नस्लें"
इस बात पर मुश्किल से विश्वास
करेंगी कि हाड़–मांस से बना ऐसा
कोई इन्सान धरती पर कभी आया था।

जन चेतना जाग्रत करने में गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में तो सफल रहे ही साथ ही उनके चमत्कारी आकर्षक व्यक्तित्व से पूरा विश्व प्रभावित हुआ, गाँधी जी में ऐसे तमाम गुण थे जिसके कारण जनता उनकी ओर खिची चली आती थी, यहाँ गाँधी जी के वैचारिक हथियार प्रस्तुत किये जा रहे है जिसके कारण लोक चेतना जागृत हुई।

गाँधी जी के सम्पूर्ण जीवन का आधार 'सत्य' पर आधारित था। सत्य के सामने वे किसी बात से समझौता करने को तैयार नहीं होते थे, चाहे इसके लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े। उनका कहना था कि हमारा प्रत्येक कार्य एवं व्यवहार सत्य के लिए होना चाहिए। सत्य के अभाव में हम किसी भी नियम का शुद्धता से पालन नहीं कर सकते, सत्य के शुद्ध अर्थ में गांधी जी सत्य और ईश्वर को एक ही मानते थे, वे ईश्वर की पूजा सत्य के रूप में करते थे।

गाँधी जी का कहना था "मेरे पास दुनियावालों को सिखाने के लिए कुछ भी नया नहीं है। सत्य एवं अहिंसा तो दुनिया में उतने ही पुराने हैं जितने हमारे पर्वत हैं।" गांधीवाद के बुनियादी तत्वों में से सत्य (जिसका अर्थ सच्चाई है) सर्वोपरि है और सत्य ही किसी भी राजनैतिक संस्था, सामाजिक संस्थान इत्यादि की धुरी होनी चाहिए। वे अपने किसी भी राजनैतिक निर्णय को लेने से पहले सच्चाई के सिद्धान्तों का परिपालन अवश्य करते थे। सत्य, अहिंसा, मानवीय स्वतन्त्रता, समानता एवं न्याय पर उनकी निष्ठा को उनकी निजी जिंदगी के उदाहरणों से बखूबी समझा जा सकता है।

अहिंसा मानव समाज के लिए नितान्त आवश्यक दशा है। गाँधी जी मनुष्य को अहिंसक आन्तरिक प्रवृत्तियों को विकसित करके एक पूर्ण शान्तिमय समाज की रचना करना चाहते थे, समस्त जीवों में 'मनुष्य' ही एक ऐसा प्राणी है, जिसमें अहिंसा, दशा, ममता रूपी संवेदनायें आत्मा में निवास करती है

जिसके आधार पर अहिंसक समाज बनता है। अतः अहिंसक समाज की स्थापना करनी आवश्यक है। एक अहिंसक आत्मा इतनी बलवान हो जाती है, कि उसे कोई भी गुलाम नहीं बना सकता है। कष्टो को सहन करना और संघर्ष में बना रहना, यह एक अहिंसक प्राणी को निरन्तर दूसरों के लिये कष्ट उठाने को प्रेरित करता है।

गाँधी का विश्वास था 'मानवता' का जन्म 'अहिंसा' से ही हुआ है। मानव की अहिंसक प्रवृत्ति ने ही सदा मानवता की रक्षा की है। उसी भावना ने मानवता को जिन्दा रखा है। अहिंसा ही विश्वबन्धुत्व को संसार में आगे बढ़ाकर उसे एक परिवार के रूप में विकसित करती है। गाँधी का विश्वास था, "अहिंसा की जाग्रति एक योगी की तरह निरन्तर उसका अभ्यास करने से होती है।" गाँधी ने कहा "सत्य का ज्ञान मुझे सरलता से हो गया लेकिन अहिंसा के लिये मुझे संघर्ष एवं कठिन परिश्रम करना पड़ा।"

कला हर तरह की हिंसा – चाहे वह दैहिक हो या मानसिक उसका प्रतिकार है। हिंसा मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देती और न ही समाज को रहने लायक छोड़ती है। विचित्र है कि इन दिनों धर्म की आड़ लेकर भी विश्व में हिंसा फैलाई जा रही है। ऐसा नहीं है कि हिंसा आज के मानव समाज पर पहली बार संकट के रूप में आई है। वह सदियों से चली आ रही है जिसमें बहुत बार राज्य–पोषित नीतियों का भी हाथ रहता है। हर तरह की हिंसा के पीछे प्रभुत्व की आकांक्षा काम करती है। व्यक्ति से लेकर समाज और समाज से लेकर राज्य तक प्रभुत्व की आकांक्षा ही वह तत्व है जो हिंसा को अपना सबसे प्रभावी हथियार बनाता है और भय पैदा करने के लिए नाना तरह की क्रूरताएँ करता है। समय बदला, सभ्यताएँ बदली, पर व्यक्ति के भीतर छिपी पशुता नहीं मरी जो हर हण अपने प्रभुत्व को लेकर शंकालु रहती है।

गाँधी जी ने कहा था कि जहाँ अहिंसा है वहाँ सत्य है और जहाँ सत्य है, वहाँ ईश्वर है, कला को मानवीय सत्य की रक्षा का ध्येय लेकर चलने का समय आ गया है और यह सत्य बिना हिंसा को निर्मूल किये नहीं पाया जा सकता।

गाँजी जी के कला के प्रति विचार :

1. संगीत, कथा–वार्ता, चित्रकला, नृत्य, नाटक, सिनेमा आदि ललित कलाएँ यदि उचित सीमा में रहें, तो वे जन–समाज के निर्दोष मनोरंजन, ज्ञान–प्राप्ति तथा भावी विकास के साधन हो सकती है, मर्यादा के बाहर चली जाये, तो शराब, अफीम जैसे हानिकर व्यसन बन जाती है।
2. आमतौर पर ऐसी कलाओं को जीविका का धंधा न बनाना चाहिए, बल्कि हर एक आदमी को इतनी शिक्षा मिलनी चाहिए कि अपनी जीविका के धंधे के अतिरिक्त ऐसी किसी कला में भी दिलचस्पी ले सके।
3. इस कारण जनता के मनोरंजन आदि के लिए ऐसी कलाओं के प्रदर्शन या जलसो की व्यवस्था लोगों के अपने उत्साह से ही और गैर पेशेवर मंडलियाँ बनाकर करनी चाहिए।
4. ऐसी कलाओं का शौक अमर्याद, अनीति की ओर ले जाने वाला तथा हानिकारक न हो जाय इसके लिए ऐसे प्रदर्शनों और जलसो पर नियन्त्रण और देख–रेख रहनी चाहिए।

5. जो लोग स्वतन्त्रतापूर्वक ऐसे धंधे करना चाहते हैं अपर नीति का नियमन होना चाहिए और अनुमति, विशेष कर इत्यादि के बंधन भी लगाये जा सकते हैं।
6. ऐसी कलाओं की उचित पुष्टि और वृद्धि के लिए राज्य की ओर से सुविधा देखकर, उनके विशेषज्ञों को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। इसमें तारतम्य भंग नहीं होता हो, तो वैसा करना उचित होगा।
7. हर एक कारीगर, जो अपने धंधे में कलावृत्ति दिखाये, प्रोत्साहन देने योग्य समझा जाये और कला की इस तरह से उन्नति करने की ओर राज्य को प्रथम ध्यान देना चाहिए।

आज के परिवेश में गाँधी जी से जुड़ा प्रत्येक विचार किसी न किसी रूप में हमारे चारों ओर परिलक्षित होता है। उनसे जुड़ा प्रत्येक विचार आज के वर्तमान समय में बहुत महत्वपूर्ण है। उनके विचार केवल आध्यात्मिकता की ओर अथवा अहिंसा एवं सत्य तक ही सीमित नहीं हैं अपितु गाँधी जी के विचार आज प्रत्येक विषय के साथ जुड़कर उसे सम्पूर्णता प्रदान करते है। उदाहरण स्वरूप कहा जा सकता है जैसे शिक्षाशास्त्र में उनके विचार इस विषय को शैक्षिक एवं दार्शनिकता की नयी ऊँचाई पर ले जाते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक विषय में गाँधी जी के विचारों ने व्यक्ति मात्र ही नहीं वरन् सम्पूर्ण समाज पर अपनी छाप छोड़ी है।

कला भी एक ऐसा विषय है जिसमें कलाकार गाँधी जी के विचारों से कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में प्रभावित होते हैं। गाँधीवादी विचारधारा से प्रेरित होकर एक कलाकार अपनी कला का ऐसे प्रदर्शन करता है। गाँधी जी स्वयं कोई कलाकार नहीं थे जो कला के माध्यम से अपने विचारों को उकेरते थे, उनमें रंग भरते थे, बल्कि गाँधी जी तो ऐसे कलाकार थे जिन्होंने वास्तविकता के धरातल पर सत्य अहिंसा रूपी अपने विचारों से जीवन की सच्चाईयों से हमेशा दृढ़ता के साथ रूबरू होने का पाठ पढ़ाकर जीवन में सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए एक कलाकार के रूप में प्रेरणा दी। गाँधी जी के विचार आज भी जीवन के प्रत्येक पहलू के लिए एक प्रेरणा का कार्य करते हैं। कला एक ऐसा विषय है जिसमें कलाकार अपने विचारों को रंगो के माध्यम से वास्तविकता का रूप देता है। गाँधीवादी विचारधारा प्रत्येक कलाकर के कार्य में कहीं न कहीं परिलक्षित होती है। उदाहरण स्वरूप गाँधी जी के अहिंसा के विचार से प्रभावित होकर कलाकारो ने इस विचार को रंगो के माध्यम से कैनवास पर उकेर कर हिंसात्मक न होने का संदेश देते हैं। आज भारत में स्वच्छता अभियान बहुत जोर–शोर से चल रहा है, इसकी प्रेरणा भी गाँधी जी द्वारा ही मिली। स्वच्छता अभियान में कलाकारों ने भी अपना बहुत योगदान दिया।

कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से सारे देश में स्वच्छता का संदेश दिया। गॉव–शहरों की वे दीवारें जो कभी गन्दगी का प्रतीक होती थी, उन पर कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन कर संदेश देती सुन्दर कलाकृतियाँ उकेरी जो कहीं न कहीं गाँधी जी के विचारों से ही प्रभावित हैं।

गाँधीवादी विचारधारा का एक अन्य उदाहरण जो कि स्वच्छता से भी प्रेरित है वो है सुप्रसिद्ध गोवा का, जहाँ सैलानियों का उमड़ा सैलाब किसी भी महीने में देखने को मिल सकता है। वहाँ पर समुद्र किनारे पर्यटकों के आवागमन के कारण प्लास्टिक बहुतायत मात्रा में एकत्रित होता रहता है, क्योंकि पानी की बोतल समुद्र कि किनारे बहुतायत में मिलना वहाँ आम बात है। "सुबोध केरकर" जी कि एक सुप्रसिद्ध कलाकार हैं उन्होंने इन पानी की लगभग डेढ़ लाख बोतलों से गाँधी जी की प्रतिमा बनायी और गाँधी

जी विचारधारा से प्रभावित होकर स्वच्छता का संदेश दिया।

अपनी भूलों को स्वीकारना उस झाड़
के समान है जो गंदगी को साफ कर
उस स्थान को पहले से अधिक साफ कर देती है।

महात्मा गाँधी

मोहनदास करमचन्द गाँधी ने बहुत से कलाकारों को प्रभावित किया लेकिन डॉ० सुबोध केरकर एक ऐसे कलाकार थे जो गाँधी जी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने 'रिक्लेमिंग गाँधी' नामक एक प्रदर्शनी लगायी जिसके लिए वह देश–विदेश घूमे, इस प्रदर्शनी के द्वारा उन्होंने नये युवा कलाकारों को जागरूक किया।

गाँधी जी के विचारों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सभी कलाकारों पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक कलाकार की कलाकृति कहीं न कहीं, गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होती है। इस कड़ी में एक अन्य उदाहरण 'सुदर्शन पटनायक' का दिया जा सकता है। गाँधी जी शान्ति के दूत थे, और सुदर्शन पटनायक जो कि एक विश्वविख्यात सैण्ड आर्टिस्ट है, उन पर भी गाँधी जी के शान्ति संदेश की गहरी छाप है।

मशहूर कलाकार सुदर्शन पटनायक को उनकी बालू की कलाकषति के लिए रूस में आयोजित पीपल्स चॉइस पुरस्कार मिला है। इस वर्ष अप्रैल में मॉस्को में अहिंसा और शान्ति के लिए महात्मा गाँधी शिल्पकला प्रतियोगिता का सृजन किया गया था, प्रतियोगिता के बाद वहाँ तब से प्रदर्शनी लगी हुई है। सुदर्शन पाटनायक रेत–कला के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। दुनिया में शान्ति को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने अपनी कला का इस्तेमाल किया। ग्लोबल वार्मिंग आतंकवाद, एड्स, धूम्रपान जैसे मुद्दों पर भी वह जागरूकता लाने की कोशिश में जुटे रहे। सुदर्शन ने पूरी में 'सुदर्शन सैंड आर्ट इंस्टीट्यूट' नाम से एक संस्था चलाते है, जहाँ पूरी दुनिया से बच्चे रेत–कला सीखने आते हैं। वह ओडिशा अन्तराष्ट्र रेत–कला उत्सव के ब्रान्ड एम्बेसडर भी है।

सुदर्शन पटनायक ने पुरी में बंकिमुहान के नजदीक बीच को प्रदूषण मुक्त करने की मांग को लेकर भूख हड़ताल भी की थी। पटनायक ने 'पुरी बंकिमुहान बीच बचाओ' के संदेश के साथ अपनी रेत की एक कलाकृति बनायी जिसमें उन्होंने गाँधी जी के चश्में में 'स्वच्छ बंकिमुहान बीच' लिखकर प्रदूषण के खिलाफ अपनी कला के जरिये धरने पर बैठकर विरोध किया।

गाँधी जी की विचारधारा का पटनायक जी पर प्रभाव का एक अन्य उदाहरण शान्ति का भी है। जिस प्रकार गाँधी जी ने सम्पूर्ण विश्व को शान्ति का संदेश दिया वहीं शान्ति का संदेश सुदर्शन पटनायक जी ने अपनी रेत की कलाकृति के माध्यम से पूरी दुनिया को दिया। उदाहरण के लिए 26/11 मुम्बई हमले में शहीद हुए मृतको को अपनी कलाकृति के माध्यम से श्रद्धान्जलि दी और सम्पूर्ण विश्व को शांति का संदेश दिया। शान्ति के प्रतीक कहे जाने वाले महात्मा बुद्ध की रेत पर अपनी कल्पना के द्वारा उभार कर उस कलाकृति के माध्यम से विश्व में शान्ति का संदेश पहुँचाया। हाल ही में हुए सिरिया में हिंसा के दौरान एक फोटोग्राफर द्वारा ली गयी एक बच्चे की तस्वीर को उन्होंने अपनी कला के माध्यम से मार्मिक ढंग से रेत पर उकेरा। अत्यन्त हृदयस्पर्शी इस कलाकृति में सम्पूर्ण विश्व के लोगो को

नीतू

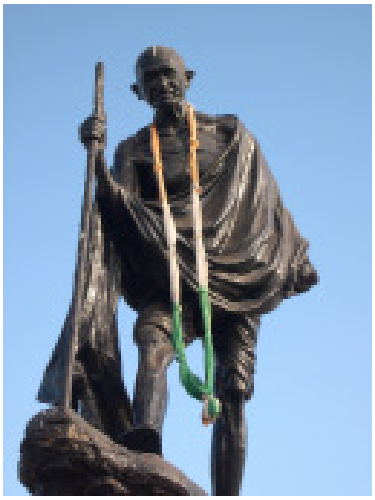

अन्दर तक झकझौर दिया इसके द्वारा सुदर्शन पटनायक जी ने सम्पूर्ण विश्व को हिंसा छोड़कर अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जो गाँधीवादी विचार धारा से ही प्रेरित है।

गाँधी जी के समकालीन कलाकार रामकिंकर बैज का गाँधी जी के सत्याग्रह में बहुत योगदान रहा उन्होंने इस दौरान बहुत से पोस्टर व बैनर तैयार किये।

''आज हम जिस तरह ग्राफिक्स या प्रिन्ट मेकिंग की बात करते है उस समय जो लिथोग्राफी होती थी उसमें भी देशी पद्धति का इस्तेमाल रामकिंकर ने किया था। इस पद्धति में वे सीमेन्ट ब्लॉक तैयार कर सत्याग्रह के दौरान कांग्रेस के लिए रातो–रात बैनर पोस्टर और नारे तैयार कर मुँह अंधेरे कलकत्ता भिजवा दिया करते थे" शाम के समय वे सीमेन्ट के बड़े–बड़े ब्लॉक तैयार कर लेते। उन पर असहयोग आन्दोलन के पोस्टर छापे जाते थे।

उसी समय के देवी प्रसाद राय चौधरी मूर्तिकला में अपना स्थान बना रहे थे। देवी प्रसाद जी ने कई महापुरूषों की मूर्तियाँ बनाई देवी प्रसाद जी की बनाई गई मूर्तियों में सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी, महात्मा गाँधी तथा मोती लाल नेहरू की मूर्तियाँ विशाल एवं असाधारण है। इनमें देवी प्रसाद जी ने इनकी चारित्रिक विशेषताओं पर अधिक बल दिया था जिससे व्यक्ति का अन्तर प्रकाशित एवं मुखर हो उठता था।

हम महात्मा गाँधी जी की झुकी हुई दुर्बल आकषति को देखेंगे तो पायेंगे कि इस दुर्बलता में ही आंतरिक बल है जिसने स्वतन्त्रता संग्राम में समूचे राष्ट्र को नेतृत्व दिया। देवी प्रसाद ने अपने सारे विवके एवं सूझबूझ का प्रयोग करके कैकटस से उलझती उनकी चादर को दर्शाया है जो मार्ग के अवरोधों को सामना करने की उनकी (गाँधी जी) विकट संकल्प चेतना का प्रतीक है।

नन्दलाल बसु गाँधी जी से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने कूची के साथ–साथ आवश्यकता पड़ने पर तिरंगा भी हाथ में लिया। वे बापू की तरह स्वयं भी चरखा कातते थे, उन्होंने 'असहयोग आन्दोलन' और उसके बाद 1930 ई० में 'नमक आन्दोलन' में भाग लिया। इसी वर्ष का उनके द्वारा चित्रित चित्र 'डण्डी कूच' उनके श्रेष्ठ चित्रों में गिना गया। स्वाधीनता आन्दोलन के अन्य प्रमुख नेताओं के साथ बसु के अच्छे सम्बन्ध थे। (नेहरू जी, सरदार पटेल, भूला भाई देसाई) राष्ट्रपति महात्मा गाँधी के आग्रह पर चित्र साधना घर के लिए मत करो के आह्वान पर बसु ने अनेक चित्रों का निर्माण किया।

आपने लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में छात्रों के साथ मिलकर 'भारत कला प्रदर्शनी' आयोजित की व पुनः सन् 1937 ई० में 'फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन' में मंच व तोरण की सज्जा की। सन् 1937–38 ई० में हरिपुरा पोस्टर बनाये। 'हरिपुरा कांग्रेस' के पंडाल की साज–सज्जा में योगदान दिया। 'पल्ली अधिवेशन' में 'किसान जीवन' का चित्रण किया। स्वाधीन भारत के संविधान की पांडुलिपि का अंकन भी उन्हीं के निर्देशन में हुआ था।

सान्याल ने गाँधी जी के देश को पाश्चात्य प्रभाव से मुक्त कराने के उद्देश्य से चलाये जा रहे 'असहयोग आंदोलन' में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। सान्याल गाँधी जी से बहुत अधिक प्रभावित थे वे स्वयं कहते थे कि "महात्मा गाँधी का अहिंसा का सिद्धान्त ओर अंग्रेजो के साथ असहयोग ने भी मुझे प्रभावित किया, जब गाँधी जी ने यह अपील की कि सभी भारतीय बुद्धिजीवियों को अंग्रेजो के साथ असहयोग करना चाहिये तो मैंने उच्च शिक्षा का परित्याग कर दिया, आपने कॉलेज को छोड़ दिया क्योंकि यहाँ के प्रिंसिपल एक अंग्रेज थे।"

राम सुतार भारत के एक सुप्रसिद्ध मूर्तिकार है। इन्होने कई महापुरूषों की बहुत विशाल मूर्तियाँ बनायी और उनके माध्यम से प्रचुर मात्रा में नाम कमाया। इन्होंने 17 फूट ऊँची मोहनदास कर्मचन्द गाँधी जी की मूर्ति बनायी जो गुजरात के गाँधीनगर में स्थित है।

पटना – राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 70 फीट की विश्व की सबसे ऊँची 10 करोड़ की लागत से बनी कांस्य प्रतिमा का राजधानी पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में शुक्रवार को अनावरण किया गया।

मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने 30 फीट के आधार वाली और 40 फीट की ऊँचाई वाली इस प्रतिमा का निर्माण कराया है। इससे पहले गाँधी जी की अब तक कि सबसे ऊँची 16 फीट की प्रतिमा दिल्ली में संसद भवन परिसर में स्थित है।

पटना में कांस्य से बनी इस प्रतिमा का निर्माण राम सुतार फाइन आर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड ने किया है।, जो प्रख्यात मूर्तिकार राम सुतार की कम्पनी है। राम सुतार के पुत्र अनिल रामसुतार ने बताया सात करोड़ की लागत से इस प्रतिमा का निर्माण किया गया।

मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने कहा महात्मा गाँधी की इस प्रतिमा का निर्माण विशेष रूप से आने वाली पीढ़ी के लिए कराया गया है ताकि वह गाँधी के जीवन से प्रेरणा लेती रहे। चारों ओर जो पट्टिकाएं लगाई गई हैं ये गाँधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई को उजागर करते है। गाँधी मैदान में इसे देखने के लिए आने वाले लोगों का लोक शिक्षण होगा। उन्होंने कहा कि इस प्रतिमा के नीचे लगी पट्टिकाओं में चंपारण सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) और नमक सत्याग्रह (1930) को प्रकट किया गया है। यह प्रतिमा आजादी की लड़ाई के बारे में बुनियादी बातों से भी अवगत कराएगा। इसकी जानकारियाँ यही दी गई है। गाँधी ने जो बात कही थी उसे इसमें समाहित किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्व शान्ति के प्रतीक गाँधी ने कहा था कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। इसकी मूर्ति के नीचे लगी पट्टिकाओं में प्रतिबिंबित किया गया ह। गाँधी का सत्याग्रह का प्रयोग हमेशा पीड़ित लोगों का मजबूत हथियार बना रहेगा। आने वाली पीढ़ी गाँधी की प्रेरणा से लाभान्वित होती रहेगी। सुतार ने कहा कि वह और उनके पिता विश्व के 120 देशों में महात्मा गाँधी की प्रतिमाए लगा चुके हैं। यह अपने आप में एक अनूठी प्रतिमा है। जिसके निर्माण में एक वर्ष का समय लगा। बापू के साथ एक बच्चे और बच्ची की प्रतिमा भी जो गरीबों के उत्थान का संदेश देती है। उन्होंने कहा यह अमीरी और गरीबी की खाई दूर करने का संदेश देती हुई महात्मा गाँधी की मुस्कुराती हुई प्रतिमा है, सबसे प्रेम करने का संदेश देती है जो विश्व शान्ति के लिए सबसे आवश्यक है।

जिस तरह कलाकार गाँधी जी के विचारो से प्रभावित थे उसी तरह गाँधी जी भी कलाकारों से प्रभावित थे। तीन आधुनिक दार्शनिकों, जॉन रस्किन, हेनरी डेविल थोरो तथा टॉलस्टॉय ने गाँधी जी को अत्यन्त प्रभावित किया। जॉन रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' से शारीरिक श्रम का आदर करना सीखा तथा उस आर्थिक व्यवस्था को सर्वोत्तम माना जिससे सबको लाभ हेता है। थोरो से गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा की प्रेरणा ली। टॉलस्टॉय के प्रभाव में गाँधी जी के मन का संशय तथा नास्तिकता दूर हो गयी और अहिंसा के प्रति उनका विश्वास दृढ़ हो गया। टॉलस्टॉय ने प्रेम को सभी समस्याओं का समाधान माना था उन्होंने कहा था कि ईसा अपने पड़ोसी के साथ झगड़ा नहीं करता न वह आक्रमण करता है और नहीं हिंसा का प्रयोग करता है। दार्शनिकों के अतिरिक्त गुजराती कवि रायचन्द भाई के विचारों ने भी गाँधी जी के जीवन व विचारधारा को प्रभावित किया।

हस्त कला और बापू :

हस्तशिल्प कला और ड्रॉइंग एक सीखने की तकनीक सिद्ध, अनौपचारिक रूप से एक ऐसी कार्यशैली है, जिसके द्वारा युवा वर्ग खासतौर पर शिक्षाशास्त्र के रूप में एक नई तालीम सीख सकता है। वर्तमान समय में केन्द्र में प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने कई अभिनव योजनाओं की शुरूआत की है। 'कौशल विकास' इन निवाचारों में महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कौशल विकास की शुरूआत करते हुए ट्विटर के जरिए लोगों से अपील करते हुए कहा कि कौशल विकास मूल्य संवर्धन पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। इसके साथ ही ग्रामोद्योग विकास की अवधारणा लोगों को आत्मनिर्भर बनाने और भारत के विकास में गाँधीवादी सोच को साकार बनाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1- vle.du.ac.in

2- www.wikipedia.co

3. समकालीन कला, डॉ ज्योतिष जोशी, अंक 35 (मार्च–जून 2008), ललित कला अकादमी, पृष्ठ–2

4. गाँधी विचार–दोहन, किशोरलाल मशरूवाला, सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली, 1967 पृष्ठ–114

5- https://thewire.in/20411/what-the

6- https://www.google.co.in/search?source=

7. कला सम्पदा एवं वैचारिक, फरवरी–मर्च 2006, पृष्ठ–11
8. समकालीन भारतीय कला सीरीज (देवी प्रसाद राय चौधरी) ललित कला अकादमी, दिल्ली 1984, पृष्ठ–8
9. डॉ० रीता प्रताप, भारतीय मूर्ति कला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2010
10- m.hindi:webdunia.com/national-hin
11- m.hindi:webdunia.com/national-hin
12- vle.du.ac.in
13. मध्य प्रदेश संदेश, अक्टूबर 2016 (आवरण कथा)